International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 17-08-2025, Accepted: 16-09-2025, Published: 30-09-2025
Volume 11, Issue 3, 2025, Page No. 100-102

अश्वमेध यज्ञों में संगीत का महत्त्व

डॉ. अशोक कुमार यादव
असिस्टेंट प्रोफेसर, शासकीय भारतीय शास्त्रीय संगीत विभाग, देव संस्कृति विश्वविद्यालय, गायत्रीकुंज शांतिकुंज, हरिद्वार, उत्तराखण्ड, भारत

सारांश
अश्वमेध यज्ञों में संगीत का महत्व भारतीय वैदिक परंपरा में अत्यंत गूढ़ और गहन रहा है। प्राचीन काल से ही संगीत और मंत्र यज्ञों का अविभाज्य अंग रहे हैं, क्योंकि ये न केवल धार्मिक अनुष्ठान को प्रभावशाली बनाते हैं, बल्कि मानसिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक उर्जा को भी जागृत करते हैं।

मूल शब्दः अश्वमेध यज्ञ, संगीत, मंत्र, अध्यात्म, संस्कृति।

यज्ञ भारतीय संस्कृति की प्राचिनतम विद्या है। यजुर्वेद में उन मंत्रों का संकलन है, जिनका गायन यज्ञादि के अवसर पर कर्मकांड के लिए होता था। सामवेद को ''संगीत का वेद'' कहा जाता है, और इसमें प्रयुक्त गीत यज्ञों में देवताओं को प्रसन्न करने के लिए गाए जाते थे। यह न केवल आध्यात्मिक उन्नति का साधन था, बल्कि संगीत के रूप में यज्ञों की आत्मा भी माना जाता था। साम का गायन साम गायकों द्वारा ही होता था। यजुर्वेद में वर्णित सोमयज्ञ में साम गायक का सर्वप्रथम स्थान है जिसमें चार गायक होते थे, जिनको क्रमशः होता, अर्ध्वय, उद्गाता तथा ब्राह्मण कहते थे। यज्ञ कार्यों का संचालन अर्ध्वयु, नामक ऋत्विज के द्वारा किया जाता था। यज्ञों में उद्गाता प्रमुख गायक होता था तथा अन्य गौड़ प्रसंगों पर गायन का दायित्व प्रस्तुत प्रतिहरता, उद्गाता नामक सहयोगियों द्वारा किया जाता था। 01

मंत्रों के शब्दार्थ के अनुसार संगीत के रागों की प्रकृति के अनुसार निबद्ध कर विशेष अति प्रभावशाली बनाया जा सकता है। प्राचीन काल में अश्वमेध यज्ञ के संचालन एवं मंत्रों आदि के लिए उद्गाता होते थे, जो संगीत के अच्छे जानकार होते थे उनकी उपस्थिति में अश्वमेधिक मंत्रों का उच्चारण होता था वे संगीत के साथ–साथ वैदिक कर्मकाण्ड के ज्ञाता होते थे, उन्ही को अश्वमेध यज्ञ के मंत्रों को उच्चारण हेतु नियुक्त किया जाता था। अश्वमेध यज्ञ की परंपरा सबसे पहले

1. रामायण में भगवान राम ने माता सीता के त्याग के बाद अश्वमेध यज्ञ किया था।
2. महाभारत में महाराज युधिष्ठिर ने महाभारत युद्ध के बाद अपने साम्राज्य की पुनः स्थापना हेतु अश्वमेध यज्ञ किया था।
3. गुप्त वंश के सम्राट समुद्रगुप्त और कुमारगुप्त ने भी अश्वमेध यज्ञ किया था।
4. परंतु कुछ कालखण्ड तक इस परंपरा को लोग भूल ही गए थे, इस युग में उन्ही परंपरा को वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने फिर से पुनर्जीवित किया है। अब तक गायत्री परिवार द्वारा 47 अश्वमेध यज्ञ सम्पन्न हो चुका है।

अश्वमेध महायज्ञ

अश्वमेध का उद्देश्य अपनी विभिन्न प्रकार की सामर्थ्यां को राष्ट्र निर्माण के लिए नियोजित करने की प्रक्रिया है। संचित कुसंस्कारिता क्षूद्र प्रयोजन में निरत रहने के लिए हर एक क्षण मन ललचाती रहती है स्वजनों का आग्रह भी ऐसे ही दबाव डालता रहता है अब ऐसे कुत्साओ से घिरे हुए लोक प्रभाव को उलटने के लिए समस्त अवरोधों को पार करते हुए उपलब्ध सामर्थ्य को निर्वाह के लिए न्यूनतम रखने के उपरान्त शेष को राष्ट्रहित व समाज हित में लगा देने की व्रतशीलता ही अश्वमेध यज्ञ है। जिसमें अश्व समाज में फैली हुई बुरी कुरीतियों का रोधक है, तथा मेधा उन्हें जड़ से उखाड़ फेंकने की ओर संकेत करता है। 02

पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा अश्वमेध यज्ञों में संगीत

अश्वमेध यज्ञ केवल धार्मिक अनुष्ठान नही था बल्कि यह धर्म, समाज और संस्कृति का संगम था। जिसका महत्त्व सभी वेद–पुराणों में वर्णित है – रामायण, महाभारत, पुराण, उपनिषद, वेद आदि में संगीत के साथ कर्मकांड का उल्लेख दृष्टिगोचर होता है उसी यज्ञीय परंपरा का निर्वाह पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने युग निर्माण आंदोलन की प्रक्रिया में यज्ञीय कर्मकांड को संगीत के स्वरों के साथ जोड़कर उस प्राचीन प्रभावशाली परंपरा को पुनर्जागरण किया हैं। पूज्य गुरुदेव पंडित श्रीराम शर्मा जी द्वारा अश्वमेध यज्ञ, वाजपेयी यज्ञ संपन्न हुए ऐसे यज्ञ जो पहले प्रतापी राजा श्रीराम जैसे राजाओं के द्वारा संपन्न हुये थे पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने सामवेद की विधा को पुनः जागृत कर भाव एवं प्रेरणा दोनों पक्ष को जनसामान्य के लिए सुरुचिपूर्ण बना दिया एवं छोटे–छोटे यज्ञों से लेकर अश्वमेध यज्ञ में कर्मकांड के मंत्रों को गेय स्वर में उच्चारण करने की नयी परम्परा का निर्माण किया जिससे वैदिक मंत्रों का प्रभाव और अधिक बढ़ सके। वैदिक कालिन परम्परा के अनुसार वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने अश्वमेध यज्ञों के मंत्रों को संगीतमय उच्चारण करने का विधान बताये हैं क्योंकि कोई भी मंत्र सामान्यतः बोला जाए तो उसका प्रभाव अलग होगा एवं उन्ही मंत्र को संगीतमय तरीके से निश्चित विधि–विधान (स्वर,लय/गति) से उच्चारण किया जाए तो उसका प्रभाव कई गुना बढ़ जाता है। इसलिए अश्वमेध यज्ञों के मंत्रों को निश्चित स्वर, लय/गति में बोला जाता है। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण गायत्री परिवार द्वारा सम्पन्न होने वाले अश्वमेध यज्ञों में देखा गया है।

इस प्रकार गायत्री परिवार द्वारा कुल 47 अश्वमेध महायज्ञ संपादित किया जा चुका है। भारत में 37 एवं विदेशों में 10 अश्वमेध महायज्ञ सम्पन्न हो चुका हैं एवं भविष्य में और होने की संभावनाएं हैं।

यज्ञ के मंत्रों को निश्चित स्वर, लय/गति में बोलने का विधान

विषय	मंत्र	स्वर, लय, गति में मंत्रों को बोलने का विधान
गुरू ईश वंदना	ॐ ब्रह्मानन्दं परम सुखदं.....	लौकिक मंत्र गेय स्वर बिलम्बित गति
मंगलाचरणम्	ॐ भद्रं कर्णेभिः.....	वैदिक मंत्र षड्ज स्वर बिलम्बित गति
पवित्रीकरणम्	ॐ अपवित्रः पवित्रो वा.....	लौकिक मंत्र मध्यम स्वर बिलम्बित गति
आचमनम्	ॐ अमृतो पस्तरणमसि स्वाहा.....	वैदिक मंत्र मध्यम स्वर बिलम्बित गति
कलशस्थापनम्	ॐ तत्वायामि तत्वयामि ब्रह्मणा.....	वैदिक मंत्र पंचम स्वर मध्यम गति
देवावाहनम्	ॐ गुरूर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः.....	लौकिक मंत्र गेय स्वर बिलम्बित गति
रक्षाविधानम्	ॐ पूर्वे रक्षतु वाराहः.....	लौकिक मंत्र धैवत मध्यम स्वर बिलम्बित गति
अग्निस्थापनम्	ॐ भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना.....	वैदिक मंत्र मध्यम स्वर बिलम्बित गति
समिधाधानम्	ॐ अयन्त इद्म आत्मा.....	वैदिक मंत्र षड्ज स्वर बिलम्बित गति
गायत्रीमंत्राहुतिः	ॐ भूर्भुवः स्वः.....	वैदिक मंत्र मध्यम स्वर मध्यम गति
पूर्णाहुतिः	ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं.....	वैदिक मंत्र गान्धार स्वर बिलम्बित गति
क्षमाप्रार्थना	ॐ आवाहनं न जानामि.....	लौकिक मंत्र गेय स्वर बिलम्बित गति
शांति अभिशिंचनम्	ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष.....	वैदिक मंत्र मध्यम स्वर बिलम्बित गति
प्रदक्षिणा	ॐ यानि कानि च पापानि.....	लौकिक मंत्र धैवत मध्यम स्वर बिलम्बित गति
विसर्जनम्	ॐ गच्छ त्वं भगवन्नग्रे.....	लौकिक मंत्र गेय स्वर बिलम्बित गति

03 यज्ञीय कर्मकाण्ड, विराट् संस्कार महोत्सव, पृष्ठ– 08–83

यज्ञों में संगीत का महत्व

1. मंत्रों का उच्चारण – संगीतमय ध्वनि

- वैदिक यज्ञों में जो मंत्र बोले जाते हैं, वे स्वयं स्वर, ताल, लय और छंद से युक्त होते हैं।
- ये मंत्र अपने आप में संगीतमय होते है और इन्हे विशेष स्वर–पद्धति (उदात्त,अनुदात्त,स्वरित) में बोला जाता है।

2. ध्वनि के माध्यम से वातावरण की शुद्धि

- संगीत और मंत्रों की ध्वनि से एक विशेश प्रकार का कंपन (अपइतंजपवद) उत्पन्न होता है जो वातावरण को शुद्ध और ऊर्जावान बनाता है।
- इससे नकारात्मक ऊर्जा हटती है और यज्ञ स्थल पवित्र होता है।

3. ईश्वर की आराधना का माध्यम

- वेदों में कहा गया हैः ''संगीतं ब्रह्मणो रूपम्'' संगीत ब्रह्म का रूप है। ''नादब्रह्म'' ब्रह्मांड की उत्पत्ति नाद (ध्वनि) से माना जाता है।
- संगीत के माध्यम से यज्ञ में ईश्वर का आवाहन, स्तुति और प्रार्थना की जाती है।

4. यजमान और उपस्थित लोगों के मन की शांति

- जब संगीतपूर्ण वातावरण में यज्ञ होता है, तो सभी का मन एकाग्र होता है।
- भक्ति, श्रद्धा और आस्था बढ़ती है, जिससे यज्ञ का प्रभाव कई गुना बढ़ जाता है।

5. समूह सहभागिता और सांस्कृतिक समरसता

- यज्ञों में भजन, कीर्तन, श्लोक–पाठ जैसे संगीतमय तत्व लोगों को जोड़ते हैं।
- इससे समाज में एकता, सांस्कृतिक जागरूकता और सहभागिता बढ़ती है।

अश्वमेध यज्ञों में प्रयुक्त होने वाले गीत

अश्वमेध यज्ञ में कर्मकांड एवं गीत–संगीत अत्यंत प्रभावकारी देखा गया है, यज्ञ में उध्वर्यु, होता के साथ–साथ उद्गाता का एक पूरा दल होते है। इन यज्ञों में वीणा की स्वर, पखावज, तबला की थाप, वायलिन की गूँज, सितार की मधुर ध्वनि, बाँसुरी की अनहद नाद, हारमोनियम, शंख ध्वनि, घंटा, घड़ियाल के साथ यज्ञों की भव्यता में चार चांद लगाते हुए अति प्रभावकारी बनाया जाता है। हजारों की संख्या में भाग लेने वाले लोगों को उस यज्ञीय भावनाओं में बांधे रखने के कार्य में संगीत की अहम भूमिका देखी गई है। ऋग्वेद में संज्ञानशूक्तं में एक मंत्र है–

सहनाभवतु सहनौभुनन्तु सहवीर्यम् करवावहै,
तेजस्विनावधीमस्तु मा विद्विशावहै ।।

जिसका सर्वप्रथम हिंदी रूपांतरण शांतिकुंज द्वारा हुआ है। संगीत के स्वरों में गाने का प्रयोग शांतिकुंज में ही सर्वप्रथम किया गया है। स्वरों में निबद्ध रचना इस प्रकार से है–

साथ–साथ हो रक्षण पालन साथ–साथ पुरुषार्थ करें।
तेजस्वी हो ज्ञान हमारा नहीं परस्पर द्वेष करें। 04

- **आचार्य वरण के समय गीत**

यज्ञ के सुक्ष्ममंत्र से सम्पर्क बनाकर प्रकृति में सन्तुलन बनाया जा सकती है। इस विधा के जानकारों–विशेषज्ञों को ही यज्ञ का आचार्य वरण करने का विधान है। अतः आचार्य वरण के समय गाये जाने वाले गीत

गीत– वरण आचार्य करने की तुम्हे, आशा लगाये हैं ।
प्रभो चरणों में झुककर, प्रार्थना यह ले के आये हैं ।।
सजल श्रद्धा, प्रखर प्रज्ञा, पधारें शक्ति शिव बनकर ।
तुम्हारे अंश नन्हें दीप, हम पलकें बिछाये हैं ।। 05

- **गायत्री स्तवन**

संस्कृत के गायत्री स्तवन मंत्र की शक्ति तो पूरी होती है परंतु जनसामान्य को अर्थ समझने में कठिनाई होती है जिस कारण आचार्य श्री द्वारा शांतिकुंज में इसका हिंदी रूपांतरण किया गया जो कि गेय स्वरों में निबद्ध है। मंत्रों की शक्ति एवं रागों के स्वर की शक्ति दोनों मिलकर अति प्रभावकारी होना निश्चित हो जाता है यह कार्य पूज्य गुरुदेव पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने समझकर इसे क्रियान्वित किया है।

शुभ ज्योति के पुंज, अनादि अनुपम, ब्रह्माण्ड व्यापी आलोक कर्ता ।
दारिद्रय, दुःख भय से मुक्त कर दो, पावन बना दो हे देव सविता ।। 06

इसी क्रम में महाकालाष्टक जिसको हिंदी में पद्यानुवाद कर संगीत के माध्यम से लोगों के सामने रखा गया जिसे लोग मंत्र के भाव को समझ कर लाभान्वित हुए महाकालाष्टक का पद्यानुवाद इस प्रकार से किया गया है–

असंभव पराक्रम के हेतु तत्पर, विध्वंस का जो करता दलन है।

नवयुग सृजन पुण्य संकल्प जिसका, ऐसे महाकाल को नित नमन है ।।1।।
भू पर भरी भ्रान्ति कि आग के बीच, जो शक्ति के तत्व करता चयन है।
विकसित किये शांतिकुंजादि युगतीर्थ, ऐसे महाकाल को नित नमन है ।।2।। 07

- **सर्वतोभद्र पूजन के समय गीत**

यज्ञीय कर्मकांड में सर्वतोभद्र पूजन का क्रम होता है उसमें गणपति के आवाहन वैदिक मंत्रों को भी स्वरों में ढालकर उस मंत्र के भाव के अनुकूल रागों में उच्चारण किया जाता है एवं संगीत के द्वारा भगवान गणेश की विशेषताओं के उनके मंत्रों को हिंदी अनुवाद कर संगीत के माध्यम से जन समूह को अर्थ समझा कर भावनाओं से जोड़ा जाता है यह विद्या अपने आप में अति प्रभावकारी देखा गया है जैसे

विघ्न विनाशक हे सुरपूजित, हे घट–घट वासी ।
देवों के भी देव गजानन, गणपति कैलाशी ।
विश्वमूर्ति विद्यासागर, विद्या विस्तार करो ।
महायज्ञ में आओ आहुतियाँ स्वीकार करो, जनकल्याण करो ।। 08

- **सप्तऋषि आवाहन के समय गीत**

बड़े यज्ञायोजन में सभी ऋषियों को मंत्रों द्वारा आवाहन किया जाता है, मंत्रों के भाव सभी के दिलों–दिमाग में बैठ सके इसके लिए आचार्यश्री के प्रेरणा से हिंदी अनुवाद में ऋषियों के विशेषताओं को संगीत में निबद्धकर जनसमूहों को सुनाकर एक अनोखा वातावरण देखा गया। यह विद्या लोगों को काफी प्रभावित किया है पूज्य गुरुदेव द्वारा निर्धारित ऐसे गायत्री अश्वमेध यज्ञ में भाग लेने के लिए देश–विदेश से लोग हजारों की संख्या में आते हैं। इस प्रकार भारद्वाज, विश्वामित्र, वशिष्ठ आदि सप्तऋषि का आवाहन संगीत द्वारा किया जाता है।

जैसे – गौतम ऋषि का आवाहन

श्रौत कर्म के सम्प्रदाय का जिनने किया प्रवर्तन था।
अग्निहोत्र की परंपरा से किया सुखद संशोधन था।
सभी प्राणियों के जो प्रिय, उन गौतम ऋषि को आज नमन।
ऋषि प्रिय थे जो रहे ना निष्क्रिय, गौतम ऋषि को आज नमन ।। 09

- **यज्ञ महिमा के गीत**

यज्ञ पूरा होने के बाद यज्ञ महिमा का गान संगीत के माध्यम से किया जाता है। जिसमें सभी यज्ञकर्ता एवं यजमान मिलकर यज्ञदेव की परिक्रमा लगाते हुए यज्ञ महिमा का गान करते हैं।

यज्ञ रूप प्रभो हमारे, भाव उज्जवल कीजिए ।
छोड देवें छल कपट को, मानसिक बल दीजिए ।। 10

- **देवताओं के विदाई के समय गीत**

यज्ञ के अंतिम दिवस में सभी देव शक्तियों की भावभरी विदाई दी जाती है जिस प्रकार किसी मेहमान आने पर हर्श की अनुभूति होती है ठीक उसी प्रकार विदाई के क्षण में व्यक्ति रोते हुए समस्त देव शक्तियों को ''पुनरागमनाय च'' के भाव से गीतों के माध्यम से विदाई करते हैं

किन शब्दों में देव। आपकी स्तुति जय–जयकार करें।
आप हो रहे विदा प्रभु जी, पदवन्दन स्वीकार करें ।।
इतनी नम्र प्रार्थना सुरगण। कृपया अंगीकार करें।
बार–बार आयें हम जब–जब, सादर करूण पुकार करें ।। 11

निष्कर्ष

यज्ञों में संगीत केवल सौंदर्य का नहीं, बल्कि आध्यात्मिक शक्ति और ऊर्जा का स्त्रोत है। यह ब्रह्मांडीय शक्ति को जागृत करता है, वातावरण को सकारात्मक बनाता है, और मानव चेतना को ईश्वर के समीप लाता है। इसलिए संगीत यज्ञों का आत्मिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण अंग है।

संदर्भ

1. डॉ.शिखा स्नेही, यू.जी.सी.नेट 'अरिहन्त' पब्लिकेशन्स लिमिटेड इण्डिया, पृष्ठ –7 वर्ष– 2015
2. स्मारिका, अश्मेध यज्ञ, हैदराबाद, जनवरी 2020
3. यज्ञीय कर्मकाण्ड, विराट् संस्कार महोत्सव, प्रज्ञा अभियान, षांतिकुन्ज हरिद्वार, पृष्ठ – 08–83
4. डॉ. प्रणव पण्डया, ज्ञान दीक्षा, युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट, पृष्ठ –
5. डॉ. प्रणव पण्डया, गीत संजीवनी, युग निर्माण योजना विस्तार, पृष्ठ – 359
6. युग शिल्पी संगीत, युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट, पृष्ठ –20
7. ब्रह्मवर्चस, शिवाभिशेक सुगम विधि, युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट, पृष्ठ –31
8. डॉ. प्रणव पण्डया, गीत संजीवनी, युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट, पृष्ठ –402
9. डॉ. प्रणव पण्डया, गीत संजीवनी, युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट, पृष्ठ –400
10. ब्रह्मवर्चस, कर्मकाण्ड प्रदीप, युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट, पृष्ठ –42
11. यज्ञीय कर्मकाण्ड, विराट् संस्कार महोत्सव, प्रज्ञा अभियान, शांतिकुन्ज हरिद्वार, पृष्ठ –85